ओम् शान्ति 13-03-11 मधुबन

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

– गुल्ज़ार दादी

आज अमृतवेले बाबा के पास पहुँची तो सदा के मुआफिक आज भी बाबा सामने खडे थे और दूर से अपने अमूल्य बाहों में समा लिया और मधुर महावाक्य बोले कि आओ मेरी मस्तकमणि बच्ची आओ। बाप के यह मधुर आलाप सुनते सुनते शक्ति के सागर में समाये हुए सम्मुख पहुँच गई। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आप तो जानते ही हो कि आजकल फारेन में, जापान में प्रकृति अपनी लीला दिखा रही है। बाबा मुस्कुराये और बोले बच्ची, बापदादा तो बहुत समय से बच्चों को इशारा दे रहे हैं। तो आगे चल कर समय में अचानक कुछ न कुछ पेपर आने है और आप पूर्वज आत्माओं को अपने भक्तों और दु:खी आत्माओं को मन्सा द्वारा सेवा का पार्ट बजाना है। वो ही प्रैक्टिकल में एक दृष्य देख रहे हो इसलिए अब हर एक बच्चे को विश्व कल्याणकारी आत्मा बन चलते फिरते फरिश्तेपन की ड्रेस पहन दु:खी आत्माओं की सेवा में बिजी रहना है। शक्तिशाली स्थिति की स्टेज से अशरीरी भव का मन को आर्डर दो और सेकण्ड में अशरीरी बन मन्सा सेवा में बिजी हो जाओ। यह तो एक दृश्य ड्रामा में देख रहे हो लेकिन आने वाले समय में यह बढ़ते रहेंगे इसलिए बापदादा ने सभी निमित्त बच्चों को डायरेक्शन दिया है कि अचानक के समय के लिए बिन्दू बनना है, बिन्दू रूप में सबको देखना है और व्यर्थ समय-संकल्प को बिन्दू लगाना है। इसी स्थिति का अभ्यास अब बढ़ाना है और वायुमण्डल फैलाना है इसलिए हर एक को अपने लिए कोई न कोई समय निकालने की विधि बनानी है। यज्ञ सेवा करते अपनी दिनचर्या प्रमाण समय निश्चित करना है जो आत्माओं को सुख-शान्ति की किरणें बाप द्वारा निमित्त बन पहुँचानी है। इससे स्व की सेवा भी आटोमेटिक हो जायेगी जो बापदादा चाहते हैं संस्कार मिलन हो, वह भी हर समय बिजी रहने के कारण सहज हो जायेगा। व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय भी समाप्त हो जायेंगे। यही बापदादा की सभी बच्चों प्रति शुभ आशा है। अच्छा, सभी बच्चों को बहुत-बहुत याद-प्यार देना। ऐसे कहते बापदादा ने सबको दिल से प्यार की दृष्टि दी और मैं भी दृष्टि लेते साकार वतन में पहुँच गई। ओम् शान्ति।